SONAM BALA
(DEPT. OF GEOGRAPHY)
A.N.D. COLLEGE, SHAHPUR PATORY, SAMASTIPUR

19th MAY 2020
TUESDAY

FOR B.A. – II (Hons)
PAPER – 3, GEOGRAPHY OF INDIA & BIHAR

LECTURE – 47

UNIT-4 CHARACTERISTICS OF RURAL SETTLEMENT

ग्रामीण अधिवास की विशेषताएँ

ग्रामीण अधिवासों को जैसा कि 4 भागों में बाँटा गया था— ① फार्म – गृह (Farmstead) ② पुरवा या नगला (Hamlet) ③ गाँव (village) ④ बाजारी गाँव (market village)। फार्म – गृह मुख्यतः खेतिहर मैदानों की एक इकाई होती है, जिसमें केवल कृषि की जाती है, वरन् जहाँ वृक्षारोपण और पशुपालन व व्यवसाय भी विकसित हो जाते हैं। ऐसे कृषि-गृह कई गाँवों के बीच में स्थित हो सकते हैं अथवा एक ही गाँव के आस – पास। पुरवा या नगला कुछ झोपड़ियों का घरों का वह स्वरूप होता है जो गाँव की अपेक्षा आकार या संगठनों में छोटा होता है। वहीं गाँव नगले या पुरवे का एक बड़ा स्वरूप होता है जिसमें स्पष्टतः कृषि वर्ग रहता है। कृषि कार्य से संबंधित अनेक लोग जैसे – लुहार, बढ़ई, धोबी, जुलाहे, मोची, कोली आदि भी गाँव में रहते हैं जो कि किसान की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। आवश्यक आवश्यकताएँ उपलब्ध होने पर एक गाँव विकसित होता हुआ बाजारी गाँव में बदल जाता है और उसमें

Scanned by CamScanner

बाजार के गुण आ जाते हैं, eg. - विद्यालय, चिकित्सा, सुविधा, डाकघर, पुस्तकालय आदि की सुविधाओं की प्राप्ति होती है।

ग्रामीण अधिवासों की प्रमुख विशेषताएँ

1) गाँवों के निर्माण में स्थानीय रूप से मिलने वाली सामग्री का उपयोग किया जाता है। ये प्रायः मिट्टी, ईंटों और घास-फूस के बने होते हैं। पत्थर के गाँव भी अनेक क्षेत्रों में मिलते हैं। अब विकास के साथ-साथ चूना सीमेंट, लकड़ी एवं लोहे का भी उपयोग बढ़ता जा रहा है।

2) गाँव में छुआछूत का विचार अधिक पाया जाता है। गाँव के केंद्र में साहूकार, ब्राह्मण, राजपूत एवं उच्च समाज के लोगों के घर मिलते हैं और बाहर की ओर अनुसूचित जातियों आदि के। इसी भाग में शिल्पकारों के (बढ़ई, जुलाहे, तेली, चर्मकार, कुम्हार आदि के) घर भी आते हैं।

3) कृषकों के घरों के आँगन में ही या उससे संलग्न भाग में पशुओं के लिए बाड़ा, चारा, भूसा आदि रखने का स्थान होता है। छतों पर गोबर के कण्डे आदि सूखने को दिए जाते हैं।

Scanned by CamScanner

4) गाँव का संबंध अन्य बस्तियों से पगडंडियों, कच्चे रास्तों या बैलगाड़ियों के मार्गों द्वारा होता है। ③

रेखीय प्रतिरूप

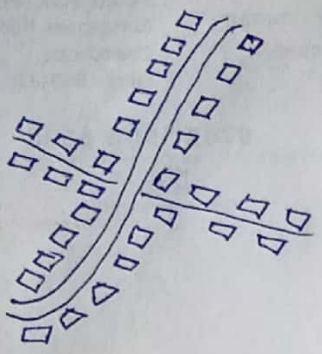

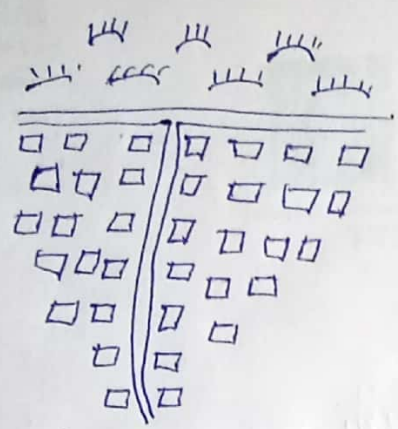

त्रिभुजाकार प्रतिरूप

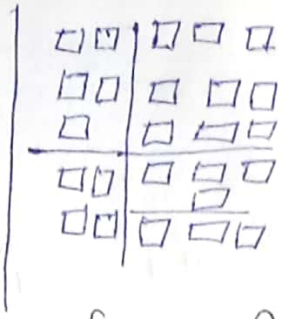

वर्गाकार प्रतिरूप

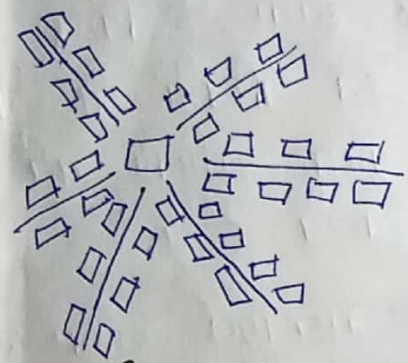

अरीय प्रतिरूप

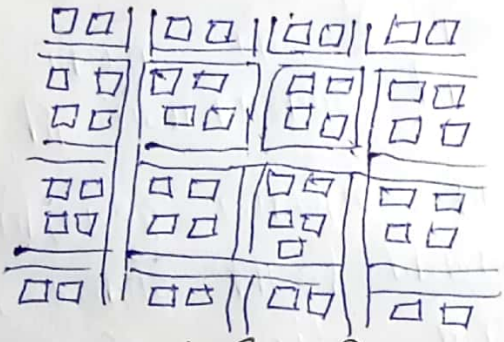

शतरंजी प्रतिरूप

तीर प्रतिरूप

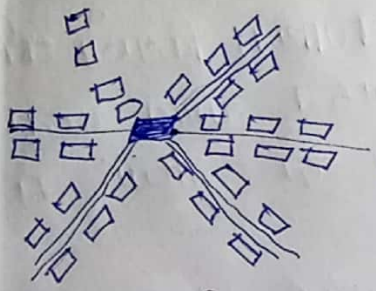

तारा प्रतिरूप

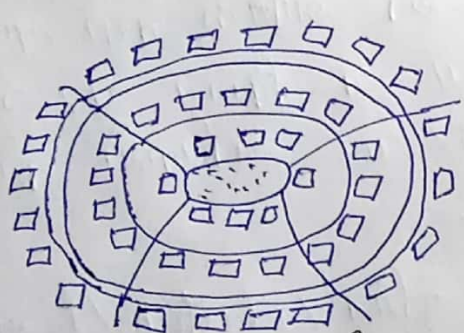

वृत्ताकार प्रतिरूप

अर्द्धवृत्ताकार प्रतिरूप

ग्रामीण अधिवासों के विभिन्न प्रतिरूप

ग्रामीण अधिवास में सामान्यतः एकाकी बस्तियाँ, कृषक घर पुरवा और गाँव सम्मिलित किए जाते हैं। ग्रामीण बस्ती से तात्पर्य उस बस्ती से है जिसके निवासी अपने जीवन-निर्वाह के लिए भूमि के विदोहन पर निर्भर करते हैं।

Scanned by CamScanner

अर्थात इनके निवासियों का मुख्य धंधा धंधा खेती करना, पशु पालना, मछलियाँ पकड़ना, लकड़ियाँ काटना आदि है। इनका जीवन एक प्रकार से ग्रामीण रूप लिए होता है किंतु इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन बस्तियों में वे लोग भी रहते हैं जो कृषकों और कृषक श्रमिकों की अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

मानव अधिवास दृश्यभूमि की महत्वपूर्ण घटना एवं इकाई है। जिनकी स्थिति आकार, स्वरूप, प्रतिरूप एवं कार्यों पर न केवल भौतिक पर्यावरण अपितु जनांकिक, सामाजिक सा संस्कृति, तकनीकी एवं आर्थिक तथा व्यावसायिक क्रियाओं की प्रकृति का क्षेत्र के स्वरूप व विकास पर गहन प्रभाव पड़ता है। इन सभी के आधार पर अधिवासों को दो - भागों में विभाजित किया है —

1) सघन (Compact), पुंजित (Clustered), संकेन्द्रित संकेन्द्रित (Concentrated), Nucleated, गुच्छित,

2) एकाकी (Isolated), प्रकीर्ण (Dispersed), बिखरी हुई (Scattered) अथवा फैली हुई या कम घनी,

---

Scanned by CamScanner